माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 5 मार्च 2016 को राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के 14 वें दीक्षांत समारोह में दिया गया भाषण।

Director General, International live stock Research Institute, Nairobi Dr. James Smith, जिनको आज Doctor of philosophy की मानद उपाधि आप सबने दी है, मैं उन्हें congratulate करता हूँ। इस profound institution के कुलपति एवं Director Dr. A.K. Srivastava; ICAR के उपमहानिदेशक (एजुकेशन) Dr. N.S. Rathour; उपमहानिदेशक पशु विज्ञान Dr. Rahman; राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के संयुक्त निदेशक (शिक्षा) Dr. R.R.B. Singh, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के संयुक्त निदेशक Dr. R.K. Malik, सभी सम्मानीय faculity members, आमंत्रित महानुभाव, अभिभावकगण, Media persons, प्रशासनिक अधिकारीगण तथा जिनको डिग्री आज प्रदत्त की गई है ऐसे सभी मेरे नौजवान साथियो!

यह क्षण जीवन का बहुत ही महत्वपूर्ण और आनंदमय क्षण है जब आपने बहुत साधना करके, तपस्या करके इस डिग्री को प्राप्त किया है। परिवार और अभिभावकगण ने भी आपको इस स्थिति में लाने के लिए बहुत त्याग किया होगा और बहुत अपेक्षाएँ की होंगी। उन सबकी अपेक्षाओं के साथ–साथ मनुष्य का जीवन बिना समाज के सहयोग के नहीं चलता। समाज अगर त्याग न करे, सहयोग न करे, तब तक हम यह जो सब कुछ प्राप्त कर रहे हैं वह प्राप्त नहीं कर सकते। जरा विचार करो कि Schools और Universities पर, infrastructure पर, faculty members पर, laboratories पर कितना पैसा यह राष्ट्र किस उम्मीद से खर्च करता है? वह आपसे क्या चाहता है? भारतवर्ष के अंदर ऐसे युवाओं की संख्या जिनको यह ड़िग्री प्राप्त होती है, वह संख्या ज्यादा नहीं होती। उसका प्रतिशत बहुत कम होता है। पूरे देश का अगर हम विचार करेंगे तो विश्वविद्यालयों में पढ़ने वालों की संख्या अढाई करोड़ से ज्यादा नहीं है। यह अवसर सबको नहीं मिलता है। इन बातों का हम जब तक विचार नहीं करेंगे और जब तक उसके अनुसार अपना व्यवहार नहीं करेंगे तो समाज के साथ अन्याय होगा। इसलिए वह विचार कीजिए। इस अवसर पर हम सबके मन में आना चाहिए, दिमाग में, मन–मस्तिष्क में ठीक ढंग से अंकित होना चाहिए कि हमसे क्या अपेक्षा की जाती है।

आप इसलिए और अधिक महत्वपूर्ण हैं कि आदमियों की चिंता तो सब करते हैं, आदमियों के बारे में सब सोचते हैं लेकिन आप live stock के बारे में सोच रहे हैं। आप animals के बारे में सोच रहे हैं। और यह इसलिए सोच रहे हैं क्योंकि राष्ट्र के विकास में इसका बहुत बड़ा योगदान है। अभी भी इतने वर्ष बीत जाने के बाद, देश की स्वतंत्रता के 68 वर्ष हो जाने के बाद भी हम आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र नहीं हैं। हम आर्थिक दृष्टि से बहुत अवलंबित हैं। आयात और निर्यात का अगर विचार करेंगे तो निर्यात की बजाय आयात ज्यादा है।

देश में food security act आया। यह food security तो हर एक को मिलनी चाहिए। उसके बिना देश आगे नहीं बढ़ सकता। लेकिन food security act जब आया तो उसमें जो आबादी कवर होती है, वह गाँव की 75 प्रतिशत और शहर की 50 प्रतिशत आबादी कवर होती है। About 67% of our population, they are not secured so for as food is concerned.

यह हम मानते हैं कि white revolution देश के अंदर हुआ है और भारतवर्ष दुनिया में दूध के मामले में नम्बर एक पर है। लेकिन आर्थिक दृष्टि से सफल बनाने के लिए, आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए, हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस काम को और आगे बढ़ाने की जरूरत है। अगर वह हम नहीं कर पाएँग तो Make in India का जो बहुत बड़ा सपना हम 21वीं शताब्दी में लेकर चले हैं वह पूरा नहीं होगा। इस दृष्टि से live stock की चिंता करना, उससे देश को समृद्ध बनाना, स्वावलंबी बनाना, financially secured बनाना, यह कितना जरूरी है? आपका उसमें योगदान कितना महत्वपूर्ण हो सकता है?

NDRI एक ऐसी संस्था है जो भारत में ही नहीं एशिया में बहुत अच्छा काम कर रही है। यह रिसर्च कर रही है और इस दिशा में बहुत आगे बढ़ रही है। आप सबको यहाँ पर पढ़ने का अवसर मिला है। आपने डिग्री प्राप्त की है। इसलिए आपको यहाँ पर जो कुछ प्रतिज्ञा दिलाई गई है, जो बातें अभी आपको convocation address में बताई गई हैं, ये आपके लिए ग्रहणीय और हमेशा पथ प्रदर्शक रहेंगी।

जब कभी दीक्षांत समारोह होता है, आपको दीक्षा दी जाती है, दीक्षांत समारोह में दीक्षा ही नहीं दी जाती, दीक्षा तो दी ही जाती है लेकिन दीक्षा के साथ–साथ आपसे दक्षिणा भी माँगी जाती है। इसलिए आप इन सब बातों का विचार करिए कि आपको इस स्थिति में लाने में किन–किन का योगदान है, राष्ट्र का कितना योगदान है।

आज अन्य समस्याएँ तो आपको देश में देखने को मिलती ही हैं, लेकिन अपने देश के अंदर एक बहुत बड़ी समस्या यह है कि 21वीं शताब्दी में जो सपना भारत देखता है उसको प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा हमारा संकुचित दृष्टिकोण है। जरा सोचिए हमारी समाज के प्रति और राष्ट्र के प्रति वरीयता क्या है? हम राष्ट्र को किस स्थान पर रखते हैं? हम सबसे पहले किसके बारे में सोचते हैं? सबसे पहले हम अपने बारे में सोचते हैं। फिर अगर फुर्सत मिल गई तो परिवार के बारे में सोचते हैं। आज तो विडंबना यह है कि लोग केवल अपने बारे में ही सोचते हैं, परिवार के बारे में भी नहीं सोचते। और अगर थोड़ा सा समय मिल गया तो अपनी जाति के बारे में सोच लेते हैं, इससे ऊपर नहीं जाते।

इसलिए हमारी वरीयता क्या है? Nation first, यह हमारी वरीयता होनी चाहिए। हमारी वरीयता self है। Self first. होना उल्टा चाहिए। self last में होना चाहिए Nation first होना चाहिए। इस तरह अपने देश में जिन–जिन चीजों की आवश्यकता है

उनमें सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि आप राष्ट्र के बारे में क्या सोचते हैं? राष्ट्र के बारे में आपके मन में क्या विचार हैं? यह सोचने की जरूरत है। भारत की एकात्मकता पहले है। आप विचार तो करिए कि 1947 में आपको स्वतंत्रता मिल गई। आप खुली हवा में सांस ले रहे हैं, अपनी योजनाएँ बना रहे हैं। परंतु यह स्वतंत्रता दिलाने के लिए किन–किन ने कुर्बानी दी है? क्या–क्या किया है? उनका determination क्या था? उनका संकल्प क्या था? उसका जरा विचार कीजिए।

आप विचार कीजिए महात्मा गाँधी का जो देश की स्वतंत्रता दिलाने में सबसे अगवा थे। इसलिए उनको father of the nation हमने कहा। उन्होंने तो बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की थी। वह भी देश से नहीं विदेश से प्राप्त की थी, इंग्लैंड से प्राप्त की थी। लेकिन बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात जब वे देश में आए तो उस समय देश गुलाम था। अपने देश के मजदूर विदेशों में, जहाँ इंग्लिस रूल था, वहाँ पर जाकर काम करते थे। 24 घंटे में 18 घंटे उनसे काम लिया जाता था। इसलिए अफ्रीका में रहने वाले देशवासियों ने उनसे कहा कि कुछ समय के लिए आप अफ्रीका जाइए और देखिए हमारी क्या हालत है? अफ्रीका में जाकर जो कुछ उन्होंने देखा तो महात्मा गाँधी ने जो बैरिस्टर की उपाधि प्राप्त की थी उसका कोई उपयोग नहीं किया। वे उसको भूल गए। उन्होंने कहा कि अब मेरा पहला उद्देश्य यह है कि मैं देश को स्वतंत्र कराऊँगा। इसलिए quit India कहा अंग्रेंजो को, भारत छोड़ो।

ऐसे कितने नाम गिनाएं आपको। स्वातंत्र्य वीर सावरकर जिन्हें हमने स्वातंत्र्य वीर कहा। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, कितने क्रान्तिकारी, कितने लोगों ने लाठीयाँ खाईं। उन सबने हमको स्वतंत्रता दी है। अगर उन्होंने राष्ट्र के बारे में विचार नहीं किया होता, people के बारे में विचार नहीं किया होता, जनता के बारे में विचार नहीं किया होता तो यह स्वतंत्रता आपको नहीं मिलती। एक हजार वर्ष तक हम गुलाम थे। क्या उस समय हमारे पास सामर्थ्य नहीं था? अगर हम चाहते और राष्ट्र को सर्वोच्च मानकर चलते तो देश गुलाम होता क्या? पूरे इतिहास में हम अगर जाएँगे तो हमें समझ में आएगा कि राष्ट्र जो सर्वोपरि है यह भावना न होने पर कितनी आपत्तियाँ आती हैं, कितनी बाधाएँ आती हैं। इसलिए यह भाव हमारे मन में आना चाहिए।

East India Company जो लार्ड क्लाइव ने स्थापित की, वह तो भारतवर्ष में व्यापार करने आया था। वह राज करने नहीं आया था। लेकिन जब भारत में लोगों की उसने हालत देखी कि ये तो एक हैं ही नहीं, एक साथ चलते ही नहीं हैं, राष्ट्र की भावना है ही नहीं, राष्ट्र को एक मानते ही नहीं, इसलिए अंग्रेजों ने भारत को एक राष्ट्र कभी नहीं कहा। उन्होंने कहा India is not a nation. It is a nation in the making. यह जो उन्होंने कहा वह इसलिए कहा कि अंग्रेजों ने अपने रूल के अंदर अपने सब राजाओं को एक कर दिया और खुद राजा बनकर बैठ गए। वे राजा एक या दो नहीं थे, 565 राजा थे उस वक्त। जब अंग्रेज गए तो उन 565 राजाओं को इस देश का चार्ज देकर गए थे। कहा हमने आपसे लिया था आप ही संभालो। यह तो सरदार वल्लभ भाई पटेल थे।

उन्होंने सब राजाओं को बुलाकर कहा कि स्वतंत्रता तुम्हारे कारण नहीं मिली इसलिए विलय पर दस्तक करो। सबके दस्तक करा लिए। वह ईस्ट इंडिया कम्पनी जो व्यापार करने आई 1757 से 1857 तक इस देश में राज करती रही। कमी क्या थी? जब 1857 में स्वतंत्रता संग्राम हुआ तो इंग्लैंड की रानी ने कहा कि अब ईस्ट इंडिया कम्पनी राज नहीं करेगी, अब हम राज करेंगे। बाद में उनका राज चलता रहा।

विचार करने की जरूरत है कि यह क्यों हुआ? अब भी ऐसी बात तो नहीं है? अब भी ऐसी forces तो नहीं हैं? अब भी देश को एक करने के लिए जो बातें होनी चाहिएं वे हैं या कि नहीं? यह तब हो सकता है जब हम संपूर्ण राष्ट्र को एक मानें। ''हिमालयात समारम्भा यावत हिन्दसरोवरं।'' जो हिमालय से प्रारंभ होता है और हिन्द महासागर तक है। ''तदैव निर्मितं देशम् हिन्दुस्तानम् वर्तते।'' यह राष्ट्र किसी राजा ने नहीं बनाया है। यह राष्ट्र देवताओं ने बनाया है। यह साधु–संतों ने बनाया है। इसकी अपनी एक पहचान है। इसकी अपनी एक कल्चर है। इसकी अपनी एक tradition है। यहाँ की life style है। यहाँ की जीवन पद्धति है। यह जीवन पद्धति इतनी विचित्र है कि व्यक्ति नर के रूप में पैदा होता है और नारायण बन जाता है। ईश्वर का साक्षात्कार करता है। यह वह देश है।

अब यह अपेक्षा हम 125 करोड़ लोगों में से किनसे करें? आप से नहीं करें तो किन से करें? जिनको समाज ने और परिवार ने सब कुछ दिया है और इस स्थिति तक पहुंचाया है। इसलिए एक ही दक्षिणा चाहिए कि राष्ट्र के बारे में सोचिए। यहाँ के लोगों के बारे में सोचिए। आप राष्ट्र की बहुत अच्छी सेवा कर सकते हैं। आपने जो डिग्री प्राप्त की है उसके माध्यम से, live stock के सहारे से इस देश को भोजन के मामले में आत्मनिर्भर बना सकते हैं। इस देश को बहुत आगे ले जा सकते हैं। इसलिए यह विचार अपने मन में जरूर संजोएं। भगवान आपको आशीर्वाद दे। आपको अच्छा जॉब मिले। आपकी आवश्यकताएँ पूरी हों। लेकिन इसके साथ–साथ हमारा मस्तक राष्ट्र के बारे में हमेशा ऊँचा बना रहे। इन्हीं आशाओं और अपेक्षाओं के साथ मैं अपनी बात खत्म करता हूँ।

जयहिन्द!